दिनांक :- 27-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेकाई :- तेरह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना

सत्ता के लिए संघर्ष : सत्ता के लिए कुओमिनतांग और साम्यवादियों के संघर्ष का इतिहास चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना का इतिहास है। इस समय चीन में कई सरकारें कायम थी। प्रथम नानकिंग की कुओमिनतांग सरकार जिसका अध्यक्ष च्यांग काई शेक था। द्वितीय कैंटन की वामपंथी सरकार जिसका प्रधान संचालक वांग चिंग वेई और चेन कुंग पो थे। तृतीय साम्यवाद सरकार जो

क्वांगसी, आन्हुई और फुकेन प्रांतों पर अधिकार का शासन कर रही थी। इसका महान नेता माओ त्से तुंग था। चतुर्थ, उत्तरी चीन में प्रांत पतियों या सिपहसालारों की सरकार थी। इसमें सुस्यूह लियांग का बोलबाला था। च्यांग काई शेक ने 1923 से 1936 तक इन सरकारों को नष्ट करने का प्रयास किया। उसे सबसे अधिक संघर्ष साम्यवादियों से करना पड़ा। च्यांग काई शेक के सबसे बड़े शत्रु साम्यवादी थे। 1931 तक चीन के अनेक प्रांतों पर इनका अधिकार हो गया था। 1933 में च्यांग उन्हें पराजित करने के लिए चार-चार बार उन पर आक्रमण किया। किंतु वे अपराजित रहे। तब अनेक अधिकांश प्रदेशों पर अधिकार करके कुओमिनतांग सेना ने वहां की जनता को सताना शुरू किया। 1934 तक हजारों साम्यवादी कत्ल किए गए। च्यांग ने उनके दमन के लिए एक विनाशकारी दल का भी निर्माण किया जिसे नीली कमीजों वाला कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

क्योंकि वे नीले रंग की कमीज पहनते थे। इस दल के सदस्य साम्यवादी होने के संदेह पर किसी को गिरफ्तार कर उसे मौत की घाट उतार देते थे। इस दल ने साम्यवादियों का दमन करना शुरू किया। च्यांग काई शेक ने कुओमिनतांग सेना को शक्तिशाली बनाने के लिए राजनीतिक शिक्षा देना शुरू किया यह खुलकर प्रचार किया गया कि साम्यवादी चीन के सबसे बड़े शत्रु है। और उनका अन्तर्राष्ट्रीयता सिद्धांत चीन की राष्ट्रीयता के विरुद्ध है। इतना ही नहीं पूंजीपतियों के भी साम्यवादियों के विरुद्ध भड़काया गया। पूंजीपति तो पहले से ही साम्यवादियों के विरुद्ध थे क्योंकि उन्हें भय था कि उनकी सरकार कायम होने पर उन्हें पूंजी से हाथ धोना पड़ेगा। चीनी नवयुवकों का समर्थन प्राप्त करने के लिए च्यांग ने सब नव जीवन आन्दोलन (New Life Movement) शुरू किया। नवयुवकों को प्राचीन चीन की गौरव गरिमा से परिचित कराया गया। यह भी कहा गया कि साम्यवादी मार्क्सवादी

सिद्धान्तो पर चीन मे समाजवादी व्यवसाय कायम करना चाहते थे जो चीन की प्राचीन परम्परा के विरुद्ध है। चीन के नवयुवक इससे बड़े प्रभावित हुए।

साम्यवादियों का महाप्रस्थान - च्यांग काई शेक की दमन नीति से ऊब कर साम्यवादियों ने स्थान परिवर्तन का निर्णय किया वे माओ त्से तुंग के नेतृत्व में क्यांसी छोड़कर उत्तर की ओर (शेन्सी) चल पड़े। उनकी यह यात्रा 1935 मे शुरू हुई थी दुर्गम तथा विकट पहाड़ो, जंगलो, नदियो को पार करते हुए छह हजार मील की लम्बी दूरी तय करने मे हजारो को प्राण गवाँने पड़े लगभग 20 हजार साम्यवादी 1936 के प्रांरभ मे शेन्सी पहुंच गए यहाँ उन्होने अपनी सरकार बनाई और येनान प्रदेश को राजधानी बनाया। इस समय उनकी अधिकार सीमा मे शेन्सी का उत्तरी और कान्सू को उत्तरी पूर्वी भाग था। अपनी सरकार कायम करके वे पुनः च्यांग की सेना से लोहा लेने की तैयारी में लग गए।

Scanned with CamScanner

च्यांग काई शेक की गिरफ्तारी:- इसी समय जापान ने चीन पर आक्रमण किया। तब राष्ट्रीयता एकता को ध्यान मे रखकर साम्यवादियो ने च्यांग से समझौता कर लेना चाहा। लेकिन च्यांग इसके लिए तैयार न था। उसने साम्यवादियो के दमन के लिए पुनः कदम उठाया। सेनापति च्यांग सुएह लियांग (chang Hsueh Liang) को उनके दमन के लिए भेजा गया। किंतु सेना ने युद्ध करना अनुचित समझा। माओ त्से तुंग ने कहा "चीनियो को आपस मे लड़ने से क्या लाभ है। उन्हे तो मिल जुल कर जापानी साम्राज्यवाद का सामना करना चाहिए और उत्तर चीन से जापान के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहिए।" उसने आगे कहा " किसानो की क्रांति मध्य वर्ग की क्रांति है। इससे पूंजीवादी के विकास मे लाभ पहुंचता है। चीन में हम पूंजीवादी के विरुद्ध नही है, बल्कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध है। यह सिद्धांत देश के प्रजातांत्रिक तत्वो की मांग की पूर्ति करता है और इसे हम दिल से स्वीकार करते है

इस भाषण का सेना पर अच्छा प्रभाव पड़ा और उसने हथियार डाल दिया। सेनापति च्यांग ने माओ से मित्रता कर ली। यह खबर पाकर च्यांग काफी क्रोधित हुआ और स्वयं शेन्सी आकर सेनापति को साम्यवादी सेना से युद्ध करने के लिए उत्प्रेरित करने लगा। लेकिन उसने युद्ध करने से साफ इन्कार कर दिया और 12 दिसम्बर 1936 को च्यांग को गिरफ्तार कर लिया। सेनापति का विचार था कि च्यांग अपनी नीति बदल दे और वह चीन में सैनिक तानाशाह की तरह नहीं रहे। बल्कि वहाँ लोकतंत्र की स्थापना करे। 25 दिसम्बर 1936 को उसे कैद मुक्त कर दिया गया।

कुओमिनतांग - साम्यवादी समझौता - इस समय चीन में जापानी आक्रमण के काले बादल मँडरा रहे थे। अतः च्यांग काई शेक साम्यवादियों से समझौता करने के लिए तैयार हो गया। समझौते की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थी।

(क) उत्तर पश्चिम के शेन्सी और कान्सू के प्रदेशों पर साम्यवादियों का शासन रहेगा।

(ख) ये राज्य पृथक तथा स्वतंत्र रूप से साम्यवादियों के अधीन रहेंगे। इन पर चीन का अधिकार रहेगा, परंतु ये साम्यवादियों द्वारा शासित होंगी।

(ग) साम्यवादियों की सेना को पृथक न मानकर उसे चीन की राष्ट्रीय सेना का एक भाग माना जाए और यह सेना च्यांग काई शेक के सारे आदेशों को स्वीकार करेगी।

च्यांग काई शेक ने साम्यवादियों की सेना को राष्ट्रीय सेना मानकर इसे आठवीं सेना की श्रेणी दे दी। अब दोनों सेनाओं ने जापानी आक्रमण का सामना किया। नानकिंग पर जापान का अधिकार होने से च्यांग को चुंगकिंग को अपनी राजधानी का सामना किया। उत्तरी पूर्वी तथा दक्षिणी राज्य और कैंटन भी जापान के अधिकार में आ गया। अब जापान दो भागों में बँट गया। जापान के अधिकृत चीन और स्वतंत्र चीन। स्वतंत्र चीन में उत्तर पश्चिम प्रदेश में येनान में साम्यवादियों की सरकार थी।

Scanned with CamScanner